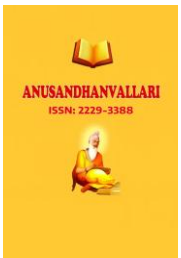

Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
May 2026
ISSN 2229-3388

'जनपद अलीगढ के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की विद्यालयी संतुष्टि एवं सक्रियता का अध्ययनः जनपद अलीगढ, उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में'

[1]Kamna Bhardwaj, [2]Dr. Yatendrapal
Research Scholar,
Associate Professor (Supervisor)
Institute of Education and Research
Manglayatan University, Beswan, Aligarh

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले किशोरों के व्यवहारिक, भावनात्मक और शैक्षणिक पहलुओं की तुलना करना है। छात्रों का शैक्षणिक प्रदर्शन, विद्यालय में उनकी सहभागिता और उनका सामान्य व्यक्तित्व विकास, सभी उनकी सहभागिता से प्रभावित होते हैं, जिसे शैक्षिक गुणवत्ता और अधिगम प्रभावशीलता का एक प्रमुख मापदंड माना जाता है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि छात्र सहभागिता के तीन महत्वपूर्ण क्षेत्रों – व्यवहारिक, भावनात्मक और शैक्षणिक – में किस प्रकार भिन्न हैं। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कुछ सरकारी और गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को इस अध्ययन के नमूने के रूप में लिया गया। तुलनात्मक और वर्णनात्मक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया। विद्यार्थियों की सहभागिता के विभिन्न पहलुओं से संबंधित डेटा मानकीकृत प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया। एकत्रित डेटा के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक विचलन और टी–टेस्ट जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणामों से पता चला कि भावनात्मक जुड़ाव के मामले में दोनों प्रकार के स्कूलों के बच्चों में मामूली अंतर था, लेकिन गैर–सरकारी स्कूलों के छात्रों में बौद्धिक और व्यवहारिक जुड़ाव का स्तर तुलनात्मक रूप से अधिक था। छात्रों के जुड़ाव पर स्कूल का वातावरण, शिक्षकों और छात्रों के बीच संबंध, शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता और अभिभावकों की भागीदारी जैसे कारकों का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि सार्वजनिक विद्यालयों में शैक्षिक संसाधनों में सुधार, रचनात्मक शिक्षण रणनीतियों का विकास और मैत्रीपूर्ण एवं सकारात्मक वातावरण को बढ़ावा देना, ये सभी छात्रों की सहभागिता बढ़ाने में सहायक हो सकते हैं। छात्रों की सफल सहभागिता और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए, यह अध्ययन शिक्षकों, प्रशासकों और विधायकों के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करता है।

मुख्य भाब्द, विद्यालयी सक्रियता, शैक्षणिक सक्रियता, भावनात्मक सक्रियता, व्यवहारिक सक्रियता, सरकारी विद्यालय, गैर–सरकारी विद्यालय, छात्र सहभागिता, विद्यालयी वातावरण, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना, शिक्षा का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना, साथ ही उन्हें ज्ञान प्रदान करना है। इस संदर्भ में, छात्र जुड़ाव (Student engagement) एक प्रमुख अवधारणा बन गई है। यह दर्शाता है कि छात्र अपनी शिक्षा में कितने इच्छुक, सक्रिय रूप से शामिल और भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं। सक्रियता को तीन प्रमुख आयामों में विभाजित किया गया है।

- शैक्षणिक सक्रियता – अध्ययन में भागीदारी
- भावनात्मक सक्रियता – विद्यालय के प्रति जुड़ाव
- व्यवहारिक सक्रियता – अनुशासन एवं सहभागिता

भारत में सरकारी और गैर–सरकारी स्कूलों के बीच संसाधनों, शिक्षण रणनीतियों और परिवेश के मामले में मौजूद असमानताओं का असर छात्रों की भागीदारी पर पड़ सकता है। किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति मूल रूप से शिक्षा पर आधारित होती है। यह केवल ज्ञान के प्रसार तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास, नैतिक सिद्धांतों के विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। वैश्वीकरण और तकनीकी नवाचार के इस वर्तमान युग में, शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए छात्रों को केवल निष्क्रिय रूप से सुनने के बजाय सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। फ्रेडरिक्स, ब्लुमेनफेल्ड और पेरिस (2004) के अनुसार, इस संदर्भ में छात्र सहभागिता एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, क्योंकि यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की समग्र प्रभावशीलता को प्रभावित करती है।

छात्रों द्वारा अपने शैक्षणिक कार्यों, कक्षा गतिविधियों और विद्यालय के वातावरण में दिखाई जाने वाली भागीदारी, ध्यान और सहभागिता को छात्र सहभागिता कहा जाता है। चूंकि सहभागी छात्र अधिक गहराई से सीखते हैं, बेहतर प्रदर्शन करते हैं और उनके स्कूल छोड़ने की संभावना कम होती है, इसलिए शोधकर्ताओं ने इसे शैक्षिक गुणवत्ता का एक महत्वपूर्ण मापक माना है (फिन 1993)। स्किनर और बेलमोंट (1993) के

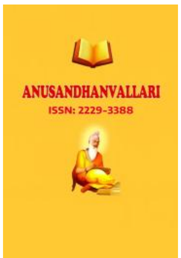

अनुसार, जो छात्र सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

छात्रों की सहभागिता को आमतौर पर तीन मुख्य श्रेणियों में बांटा जाता है, शैक्षणिक सहभागिता, भावनात्मक सहभागिता और व्यवहारिक सहभागिता। छात्रों की पढ़ाई में भागीदारी, एकाग्रता की क्षमता, गृहकार्य करने की प्रवृत्ति और शैक्षणिक गतिविधियों में उत्साह, ये सभी शैक्षणिक सहभागिता के पहलू माने जाते हैं। इसका उनके शैक्षणिक प्रदर्शन पर सीधा प्रभाव पड़ता है (OECD 2013)। सहपाठियों, शिक्षकों और विद्यालय से छात्रों के भावनात्मक जुड़ाव उनकी भावनात्मक सहभागिता में परिलक्षित होते हैं। जब छात्रों को लगता है कि विद्यालय एक सुरक्षित और प्रोत्साहन देने वाला स्थान है, तो उनकी सीखने की प्रेरणा और इच्छा बढ़ जाती है (Klem & Connell 2004)। छात्रों का आत्म–नियंत्रण, नियमों का पालन, पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी और सामाजिक व्यवहार, ये सभी उनकी व्यवहारिक सहभागिता के सूचक हैं।

भारत में सरकारी और गैर–सरकारी (निजी) स्कूलों में बहुत अंतर है। धन की कमी, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा और शिक्षक–छात्र अनुपात जैसी चुनौतियों के बावजूद, सरकारी स्कूल विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करते हैं, मुफ्त या कम लागत वाली शिक्षा प्रदान करते हैं और सामाजिक समावेश को बढ़ावा देते हैं (एनसीईआरटी, 2020)। दूसरी ओर, गैर–सरकारी स्कूलों में अपेक्षाकृत बेहतर सुविधाएं होती हैं, आधुनिक शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जाता है, कक्षाओं में छात्रों की संख्या कम होती है और व्यक्तिगत ध्यान देने के अवसर प्रदान किए जाते हैं ये सभी बातें छात्रों की सहभागिता पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं (सिंह, 2018)। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के स्कूल हैं, इसलिए यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समझना आवश्यक है कि स्कूल का प्रकार छात्रों की सहभागिता के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रभावित करता है, क्योंकि यहाँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्र पढ़ते हैं। इन दोनों प्रकार के स्कूलों के बीच अंतर स्पष्ट करने के साथ–साथ, इस तरह का तुलनात्मक विश्लेषण उन तत्वों को भी इंगित करेगा जो छात्रों की सहभागिता को बेहतर बना सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) शिक्षा को अधिक गहन, विद्यार्थी–केंद्रित और अंतःक्रियात्मक बनाने के महत्व पर बल देती है। विद्यार्थी सहभागिता बढ़ाने के लिए, इसे समझना और उपयुक्त शैक्षिक तकनीकों को लागू करना अत्यंत आवश्यक है (शिक्षा मंत्रालय, 2020)। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों की रुचियों, भावनात्मक आवश्यकताओं और व्यवहारिक विशेषताओं को ध्यान में रखने से अधिगम अधिक सफल और दीर्घकालिक हो सकता है। इसके अतिरिक्त, विद्यालय का वातावरण, सहपाठियों के साथ मेलजोल, अभिभावकों का सहयोग, शिक्षक–छात्र संबंध और संसाधनों की उपलब्धता, ये सभी छात्रों की सहभागिता पर गहरा प्रभाव डालते हैं। क्लेम और कॉनेल (2004) का दावा है कि जब शिक्षक अपने छात्रों के प्रति सहयोगात्मक और सहानुभूति पूर्ण दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो छात्रों की सहभागिता बढ़ती है। इसी प्रकार, एक सहायक विद्यालयी वातावरण बच्चों के आत्मविश्वास और सीखने की इच्छा को बढ़ाता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों में छात्रों की शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक सहभागिता का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। इसके माध्यम से यह पता लगाने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार के विद्यालयों में सहभागिता का स्तर अधिक है और इस घटना के प्रमुख कारकों की पहचान की जाएगी। यह अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत नीति निर्माताओं, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए लाभकारी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके निष्कर्ष शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए प्रभावी नीतियों और रणनीतियों को विकसित करने का आधार बन सकते हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि शिक्षा की प्रभावशीलता निर्धारित करने में छात्रों की भागीदारी एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि छात्र शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तो उनका शैक्षणिक प्रदर्शन बढ़ेगा और उनका समग्र विकास सुनिश्चित होगा।

अध्ययन के उद्देश्य (Objectives)

1. सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की सक्रियता की तुलना करना।
2. शैक्षणिक, भावनात्मक एवं व्यवहारिक आयामों का विश्लेषण करना।
3. सक्रियता को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना।
4. सुधार हेतु सुझाव प्रदान करना।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

शिक्षा के क्षेत्र में छात्र सहभागिता एक महत्वपूर्ण शब्द बन गया है, जो बच्चों के सीखने, शैक्षणिक प्रदर्शन, विद्यालय से जुड़ाव और समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करता है। पिछले कुछ दशकों में इस विषय पर कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन किए गए हैं, जो छात्र सहभागिता को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं और कारकों को स्पष्ट करते हैं।

फ्रेडरिक्स, ब्लुमेनफेल्ड और पेरिस (2004) ने छात्र सहभागिता को तीन प्रमुख आयामों में वर्गीकृत किया व्यवहारिक, भावनात्मक और संज्ञानात्मक। उनके अनुसार, व्यवहारिक सहभागिता में छात्रों की कक्षा में भागीदारी, उपस्थिति और अनुशासन शामिल हैं भावनात्मक सहभागिता में विद्यालय, शिक्षकों और सहपाठियों के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक भावनाएँ शामिल हैं जबकि संज्ञानात्मक सहभागिता छात्रों के बौद्धिक निवेश और सीखने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। यह अध्ययन छात्र सहभागिता की बहुआयामी प्रकृति को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

फिन (1993) ने अपने भागीदारी–पहचान मॉडल का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया कि छात्रों की सक्रिय भागीदारी और विद्यालय के साथ उनकी पहचान किस प्रकार संबंधित हैं। जो छात्र विद्यालय की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, वे संस्था से जुड़ जाते हैं, जिससे अंततः उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है। दूसरी ओर, जो छात्र कम सक्रिय होते हैं, उनके स्कूल छोड़ने की संभावना अधिक होती है।

शिक्षक–छात्र संबंधों के संदर्भ में छात्र सहभागिता के अध्ययन में, स्किनर और बेलमोंट (1993) ने पाया कि शिक्षकों द्वारा दिया जाने वाला अच्छा व्यवहार, प्रोत्साहन और समर्थन छात्र सहभागिता बढ़ाने में महत्वपूर्ण कारक हैं। उन्होंने यह भी पाया कि जब शिक्षक छात्रों को सीखने और अपनी समस्याओं से निपटने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, तो छात्र अधिक आत्मविश्वासी और सहभागी बन जाते हैं।

क्लेम और कॉनेल (2004) इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि छात्र सहभागिता को बढ़ावा देने वाले दो महत्वपूर्ण तत्व अनुकूल विद्यालय वातावरण और सकारात्मक शिक्षक–छात्र संबंध हैं। उन्होंने पाया कि सुरक्षित और सहयोगात्मक विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति, सहभागिता और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है।

एनसीईआरटी के 2020 के एक शोध के अनुसार, सरकारी स्कूलों में छात्रों की भागीदारी संसाधनों की कमी, शिक्षक–छात्र अनुपात में असमानता और बुनियादी ढाँचे की बाधाओं से प्रभावित होती है। दूसरी ओर, निजी स्कूलों में बेहतर सुविधाएँ और प्रशासन छात्रों की भागीदारी बढ़ाने में सहायक होते हैं।

कुमार (2019) इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि शिक्षक का कक्षा प्रबंधन, शिक्षण शैली और छात्रों के प्रति दृष्टिकोण, छात्रों की सहभागिता पर गहरा प्रभाव डालते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जब शिक्षक रचनात्मक और संवादात्मक शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करते हैं तो छात्रों का ध्यान और सहभागिता बढ़ती है।

शर्मा और गुप्ता (2021) ने पाया कि सामाजिक–आर्थिक स्थिति और माता–पिता का सहयोग छात्रों की सहभागिता पर प्रभाव डालते हैं। जिन छात्रों को उनके परिवार से अधिक सहयोग मिलता है, उनके स्कूल से संबंधित गतिविधियों में भाग लेने की संभावना अधिक होती है।

उपर्युक्त अध्ययनों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि विद्यार्थी सहभागिता एक बहुआयामी और जटिल अवधारणा है, जो विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होती है। इस विषय पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक शोध उपलब्ध होने के बावजूद, भारतीय संदर्भ में, विशेष रूप से स्थानीय स्तर पर (जैसे अलीगढ़ जिले में), सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों से संबंधित तुलनात्मक अध्ययन सीमित हैं। इसलिए, प्रस्तुत अध्ययन अलीगढ़ जिले के विशिष्ट संदर्भ में विद्यार्थियों की शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक सहभागिता का तुलनात्मक विश्लेषण करके इस शोध अंतराल को दूर करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान करेगा।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology) वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध विधियों का ही प्रयोग किया गया है।

इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक सहभागिता का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। इस खंड में, एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय उपकरणों (माध्य, मानक विचलन और टी–परीक्षण) का उपयोग करके किया गया है। यह खंड सरकारी और गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक सहभागिता का सांख्यिकीय परीक्षणों (माध्य, मानक विचलन, टी–परीक्षण) के आधार पर विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

यह पाया गया कि दोनों प्रकार के स्कूलों के बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव के मामले में कोई खास अंतर नहीं था। दोनों प्रकार के स्कूलों में विद्यार्थियों का अपने स्कूल, शिक्षकों और सहपाठियों के प्रति भावनात्मक लगाव लगभग एक जैसा ही है, जैसा कि सरकारी स्कूलों (औसत = 3.45) की तुलना में गैर–सरकारी स्कूलों (औसत = 3.60) के थोड़े अधिक औसत से स्पष्ट होता है। मानक विचलन (SD = 0.55 और 0.60) से भी यह स्पष्ट है कि दोनों समूहों के उत्तरों में कोई खास अंतर नहीं है।

व्यवहारिक सहभागिता के मामले में निजी विद्यालयों के बच्चों का औसत अंक (औसत = 3.90) सरकारी विद्यालयों के बच्चों (औसत = 3.20) की तुलना में अधिक था। इससे पता चलता है कि निजी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र अनुशासन बनाए रखने, नियमों का पालन करने और पाठ्येतर गतिविधियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त, कम मानक विचलन (SD = 0.50) यह दर्शाता है कि निजी विद्यालयों के छात्र अधिक अनुशासित और विश्वसनीय व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

शैक्षणिक सक्रियता का विश्लेषण, इस भोध पत्र मे अध्ययन से पता चला कि सरकारी स्कूलों के छात्रों की तुलना में गैर–सरकारी स्कूलों के छात्रों में शैक्षणिक सहभागिता का औसत स्तर अधिक था। इसका तात्पर्य यह है कि निजी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र कक्षा में अधिक ध्यान देते हैं, समय पर अपना कार्य पूरा करते हैं और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। टी–टेस्ट के निष्कर्षों ने दोनों समूहों

के बीच देखे गए अंतर की सांख्यिकीय सार्थकता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। इससे पता चलता है कि छात्रों की शैक्षणिक सहभागिता स्कूल के प्रकार से प्रभावित होती है।

भावनात्मक सक्रियता का विश्लेषण, यह पाया गया कि दोनों प्रकार के स्कूलों के बच्चों में भावनात्मक जुड़ाव के मामले में कोई खास अंतर नहीं था। सरकारी और गैर–सरकारी दोनों स्कूलों के छात्र अपने स्कूलों, शिक्षकों और सहपाठियों के प्रति लगभग एक समान भावनात्मक लगाव प्रदर्शित करते हैं। टी–टेस्ट के परिणामों के अनुसार, इस आयाम में देखा गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भावनात्मक जुड़ाव पर स्कूल के प्रकार का प्रभाव सीमित है।

व्यवहारिक सक्रियता का विश्लेषण, व्यवहारिक सहभागिता विश्लेषण के अनुसार, गैर–सरकारी स्कूलों के छात्रों में अनुशासन, नियमों का पालन और पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी का स्तर अधिक होता है। टी–टेस्ट के परिणामों से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर है। इससे पता चलता है कि छात्रों का व्यवहार उनके द्वारा पढ़े जाने वाले स्कूल के प्रकार से प्रभावित होता है।

समग्र सक्रियता का तुलनात्मक विश्लेषण, शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक तीनों आयामों की संयुक्त समीक्षा के अनुसार, निजी विद्यालयों के छात्रों का समग्र जुड़ाव सरकारी विद्यालयों के छात्रों की तुलना में बेहतर है। भावनात्मक जुड़ाव में मामूली अंतर यह दर्शाता है कि दोनों प्रकार के विद्यालयों में छात्रों की अपने विद्यालयों के प्रति भावनात्मक प्रतिबद्धता में कोई खास बदलाव नहीं आया है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य सरकारी और गैर–सरकारी स्कूलों में बच्चों की व्यवहारिक, भावनात्मक और बौद्धिक भागीदारी की तुलना करना था। आंकड़ों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की भागीदारी के विभिन्न पहलू स्कूल के प्रकार से अलग–अलग स्तरों पर प्रभावित होते हैं।

इस भाोध पत्र के निष्कर्षों से पता चला कि निजी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षणिक रुचि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की तुलना में अधिक थी इसके अलावा, यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण पाया गया। यह निष्कर्ष पहले के अध्ययनों (फ्रेडरिक्स एट अल., 2004 ओईसीडी, 2013) के अनुरूप है, जो दर्शाते हैं कि बेहतर संसाधन, आधुनिक शिक्षण रणनीतियाँ और कक्षा में सक्रिय भागीदारी के अवसर छात्रों की शैक्षणिक रुचि को बढ़ाते हैं। चूंकि निजी स्कूलों में तुलनात्मक रूप से बेहतर सुविधाएं और अधिक व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है, इसलिए उनके छात्र आमतौर पर अधिक रुचि बनाए रखते हैं। गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों ने भी व्यवहारिक सहभागिता का उच्च स्तर दिखाया, जिससे पता चलता है कि इन परिवेशों में सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, नियमों का पालन और अनुशासन अधिक सफल हैं। यह परिणाम स्किनर और बेलमोंट (1993) के अध्ययन के अनुरूप है, जो छात्र व्यवहार पर शिक्षक के मार्गदर्शन और सहायक वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव पर बल देता है। दूसरी ओर, भावनात्मक जुड़ाव के संदर्भ में दोनों प्रकार के स्कूलों के बीच सांख्यिकीय रूप से कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। इसका तात्पर्य यह है कि छात्र जिस प्रकार के स्कूल में पढ़ता है, उसका उसके सहपाठियों, शिक्षकों और स्कूल के प्रति भावनात्मक लगाव पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। यह परिणाम क्लेम और कॉनेल (2004) के निष्कर्षों के अनुरूप है, जिन्होंने बताया कि किसी भी शैक्षिक वातावरण में सहायक संबंध विकसित किए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की व्यवहारिक, भावनात्मक और शैक्षणिक सहभागिता शिक्षा की गुणवत्ता का एक प्रमुख निर्धारक है। अध्ययन के अनुसार, सरकारी स्कूलों के बच्चों की तुलना में गैर–सरकारी स्कूलों के बच्चे शैक्षणिक और व्यवहारिक दोनों पहलुओं में अधिक सहभागिता प्रदर्शित करते हैं, यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। दूसरी ओर, दोनों प्रकार के स्कूलों के बीच भावनात्मक सहभागिता के स्तर में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं देखा गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि बच्चों का अपने स्कूल के प्रति भावनात्मक लगाव उनके द्वारा पढ़े जाने वाले स्कूल के प्रकार से कम प्रभावित होता है। एक समीक्षा के अनुसार, गैर–सरकारी संस्थानों में छात्रों की समग्र भागीदारी और सहभागिता अधिक होती है। बेहतर बुनियादी ढांचा, प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ, संसाधनों की उपलब्धता और अनुशासित वातावरण इसके मुख्य कारण हो सकते हैं। सहसंबंध विश्लेषण से पता चला है कि शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक सहभागिता में सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध है, जो इन क्षेत्रों की परस्पर निर्भरता और पारस्परिक प्रभाव को दर्शाता है।

अतः में इस भाोध पत्र का यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि छात्रों की शैक्षणिक क्षमता और समग्र विकास में तब सफलता पूर्वक सुधार किया जा सकता है जब उनकी सहभागिता के सभी पहलुओं पर गहन विचार किया जाए। विशेष रूप से, सरकारी विद्यालयों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुदृढ़ करना चाहिए और छात्रों की सहभागिता बढ़ाने के लिए अधिक संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए। इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर छात्रों की शैक्षणिक, भावनात्मक और व्यवहारिक सहभागिता को बेहतर बनाने के लिए निम्नलिखित सिफारिशें की जा सकती हैं। शिक्षण पद्धतियों में सुधार छात्रों की शैक्षणिक सहभागिता को बेहतर बनाने के लिए, सरकारी स्कूलों में पारंपरिक शिक्षण विधियों को गतिविधि–आधारित और छात्र–केंद्रित दृष्टिकोणों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए, संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाना पढ़ाई को अधिक कारगर और रोचक बनाने के लिए स्कूलों को डिजिटल उपकरण, स्मार्ट क्लासरूम, पुस्तकालय और आवश्यक शैक्षिक सामग्री विकसित करनी चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training) छात्रों की सहभागिता बढ़ाने के लिए, शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन और छात्रों के साथ रचनात्मक संचार में नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। सकारात्मक विद्यालयी वातावरण का निर्माण छात्रों की भावनात्मक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, स्कूलों को एक सुरक्षित, सहयोगात्मक और प्रेरक वातावरण बनाना चाहिए। सह–शैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहन छात्रों की व्यावहारिक भागीदारी को बेहतर बनाने के लिए, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि वे खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, वाद–विवाद

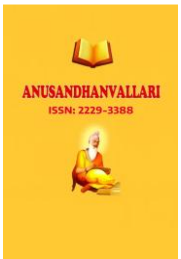

और अन्य गतिविधियों में भाग लें। अभिभावकीय सहभागिता विद्यार्थियों को घर से भी सहयोग मिल सके, इसके लिए अभिभावकों को विद्यालय के कार्यक्रमों में शामिल किया जाना चाहिए और उनके साथ नियमित रूप से संवाद बनाए रखना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] Fredricks J- A- Blumenfeld P- C- & Paris A- H- (2004)- School Engagement: Potential of the Concept- Review of Educational Research 74(1), 59–109.
[2] Finn] J- D. (1993). School Engagement and Students at Risk- National Center for Education Statistics-
[3] Skinner E- A- & Belmont M- J- (1993)- Motivation in the Classroom- Journal of Educational Psychology 85(4), 571–581.
[4] Klem A- M- & Connell J- P- (2004). Relationships Matter- Journal of School Health] 74(7), 262–273.
[5] OECD (2013). Student Engagement and Learning- OECD Publishing.
[6] NCERT (2020). Educational Survey Report- New Delhi-
[7] Singh R. (2018). Comparative Study of Government and Private Schools in India-
[8] Ministry of Education (2020). National Education Policy 2020- Government of India-
[9] Kim D- & Reschly A- L. (2008). Measuring Cognitive and Psychological Engagement- Journal of School Psychology] 46(5), 427–445.
[10] Christenson S- L- Reschly A- L- & Wylie C- (2012). Handbook of Research on Student Engagement- Springer-
[11] UNESCO (2015). Rethinking Education: Towards a Global Common Good\
[12] Kumar S- (2019). Teaching Methods and Student Engagement in Secondary Schools.
[13] Sharma P- & Gupta R- (2021). Role of Socio&Economic Factors in Student Engagement-